भेज देते हैं। हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब इंसान गहरी नींद में सो जाता है तो उसकी रूह को अर्श पर चढ़ाया जाता है, जो रूह अर्श पर पहुंचकर जागती है, उसका ख़्वाब सच्चा होता है और जैसे पहले ही जाग जाती है उसका ख़्वाब झूठा होता है। (हैसमी)

कायनात वाला रास्ता, इम्तिहान वाला रास्ता है

इंसान की रूह जब उसके जिस्म में रहती है तो अल्लाह तआला इम्तिहान के लिए उसके जिस्म में हाजातें भेजते रहते हैं और देखना यह चाहते हैं कि मेरा बंदा इन हाजातों को किन रास्तों से पूरी करता है। शिर्क वाले रास्ते से, या तौहीद वाले रास्ते से। शिर्क वाला रास्ता यह है कि इंसान अपने पलने में चीज़ों को शरीक कर लेता है कि पालने वाले तो अल्लाह है मगर सब बग़ैर सबब कैसे पालेगा?! तौहीद वाला रास्ता यह है कि अल्लाह तआला अपनी कुदरत से पाल रहे हैं और वह ही अपनी कुदरत से पालेंगे, हां उनकी कुदरत से पलने के लिए उनके अहकामात (हुक्म) हैं नमूने के तौर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िंदगी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है। देखो! अल्लाह तआला ने दुनिया के अंदर इंसान के पलने के लिए दो रास्ते अता फ़रमाए हैं। एक रास्ता कायनात वाला और एक रास्ता हुक्मों वाला। कायनात वाला रास्ता इम्तिहान वाला रास्ता है और अहकामात (हुक्मों) वाला रास्ता इनाम दिलाने वाला रास्ता है। इस ज़माने में अगर कोई इंसान चाहे तो मोबाइल या कम्पयूटर से समझ सकता है। देखो अगर आपको अपने कम्पयूटर पर उर्दू में कुछ लिखना है तो उसके लिए आपको अपने कम्पयूटर में उर्दू का सौफ़टवेयर (*Software*) डालना पड़ेगा। इस सौफ़टवेयर (*Software*) को हासिल करने के दो रास्ते हैं, एक रास्ता यह है कि आप इसे बाज़ार से खरीदकर लाओ यानी अपनी जान, माल और वक़्त लगाओ, दूसरा रास्ता यह है कि आप इंटरनेट (*Internet*) के ज़रिए सीधे अपने कम्पयूटर में डाउनलौड (*Download*) करो, तो सीधा फ़ायदा हासिल करने के लिए शर्त यह है कि आपने कम्पयूटर का इस्तेमाल करना सीखा हो। तो एक तरफ़ दुकान से ख़रीदकर लाना और एक तरफ़ हवा के रास्ते से आना। सहाबा किराम ने अल्लाह के हुक्मों पर अपने जिस्म को इस्तेमाल करना सीखा था। जिसकी वजह से सीधे

आसमानों के ऊपर से अपनी ज़रूरतों को पूरा कराते थे। जैसे हुजैर उबई इहाब की बांदी हज़रत मुआविया रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज़रत खुबैब रज़ि० को मेरे घर की एक कोठरी में बंद करके रखा गया था, एक बार मैंने दरवाज़े के दराज़ से झांका तो उनके हाथ में इंसान के सर के बराबर अंगूर का एक खोशा था, जिसमें से वह अंगूर तोड़–तोड़कर खा रहे थे जबकि उस वक़्त पूरे अरब में कहीं भी अंगूर नहीं था। यह देखकर मैंने अपना जुन्नार काट डाला और मुसलमान हो गई। कि बेशक अल्लाह तआला ज़रूरतों को पूरा करने में किसी के मुहताज नहीं हैं।

(इसाबा, 1, 419)

हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० का आख़िरी ख़िताब

इन रास्तों और इन बातों को हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० ने अपने इंतिक़ाल से बीस दिन पहले पाकिस्तान के सफ़र में बयान फ़रमाया था जिसे नीचे लिखा जा रहा है।

हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० ने फ़रमाया: भाइयों और दोस्तो! अपनी ज़िंदगी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वे तरीक़े लाओ जो अल्लाह ने अपनी ज़ात से पलने के लिए किए हैं क्योंकि नुबूवत मिलने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इंसानों से लेने का कोई रास्ता इख़्तियार नहीं फ़रमाया है, आपने ताईफ़, तबूक़, यमन, हज़र मौत और नजद (ये सब मदीना के आस–पास के बसे शहरों के नाम थे) वालों को नमाज़ बतलाई कि जो कलिमा पढ़े नमाज़ बनाने की मेहनत करे। जब यह यक़ीन बने कि अल्लाह हैं और रास्ता नमाज़ है और उसी बात की दावत भी दी जा रही हो। तो दुनिया की तर्तीब बदलेगी। इसलिए नमाज़ को अंदर से बनाओ। क्योंकि मसअले का ताल्लुक़ अंदर से है, जब यह बना लो, तो नमाज़ की बुनियाद पर तीन लाइन ठीक करो,

घर,
कारोबार,
और मुआशरत,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रास्ते में भी कमाई और घर हैं और इंसान के रास्तों में भी कमाई और घर के नक़्शे हैं। कमाई से परवरिश नहीं होती,

बल्कि अल्लाह से परवरिश तो अल्लाह का हुक्म मानकर लेंगे। जब यह बात है कि कमाई से परवरिश नहीं हो रही है, तो फिर क्यों कमाया जाए, तो पहले नमाज़ से परवरिश लो, लेकिन नमाज़ के बाद दो रास्ते हैं।

कमाना

और न–कमाना

अगर कोई न कमाए और सिर्फ़ नमाज़ पढ़कर अल्लाह से लें, तो भी ठीक है। पर उस पर शर्त सिर्फ़ यह है, कि अगर न कमाओ, तो–

किसी मख़लूक़ का माल न दबाना,

किसी के सामने अपने हाल का इज़्हार न करना,

किसी से सवाल न करना,

इशराफ़ न करना,

तक्लीफ़ पहुंचे तो जज़ा फ़ज़ा न करना,

हर हाल में अल्लाह से राज़ी रहना,

अगर ये बातें अंदर पैदा हो जाए, तो कमाई की ज़रूरत नहीं है। इसकी मिसाल के लिए चारों सिलसिले के औलिया अल्लाह हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं,

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम है,

अस्हाबे सूफ़ा (मदीने के वे ग़रीब मुसलमान जिनके पास कुछ नहीं था)

इसी तरह लाखों मिसालें हैं जिन्होंने सिर्फ़ नमाज़ से अपनी परवरिश का काम चलाया है। इसलिए अगर न कमाना हो तो, ग़सब, इशराफ़, सवाल, जज़ा फ़ज़ा और घबराहट न हो, हां अगर कमाते हो तो इसकी बुनियाद यह है कि कमाई से परवरिश नहीं होगी। अल्लाह सब कुछ नमाज़ से देंगे। मैं परवरिश के लिए नहीं कमाऊंगा बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़ा कमाई में चलाना है। हम कमाई के शोब्हों में अल्लाह के हुक्मों को पूरा करने जा रहे हैं, हमें यह यक़ीन सीखना है कि अल्लाह पाल रहे हैं इसलिए अल्लाह के हुक्म को तोड़कर नहीं कमाना है, अब जो चीज़ें हलाल हैं उनसे कमाने के दो तरीक़े हैं उनमें एक तरीक़ा हलाल है और एक तरीक़ा हराम है। कि सूअर, कुत्ता, बिल्ली वग़ैरह का

खाना हराम है, और बकरी, गाय, मुर्गी और हिरन खाना हलाल है। इन हलाल में भी हलाल और हराम बनेगा। अगर 'बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर' कहकर ज़िब्ह किया है, तो यह हलाल है और अगर 'बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर' नहीं कहा है तो यह हराम है, अगर 'बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर' कहा, पर बजाए गर्दन पर छूरी फ़ेरने के पेट से काटा तो हराम, क्योंकि तरीक़ा गलत था, इसलिए अगर कमाना है तो मसाइल की पाबंदी के साथ कमाओ, इसलिए जो बात नमाज़ में कही, वही कमाई में कहो कि 'अल–हम्दु लिल्लाहि रब्बील आलामीन' कि जब इस तरह से हमारी कमाई होगी, तो दुनिया में चमकना और फलना फूलना होगा। ज़लज़ला, सैलाब, बमबारी हो, पर हमारी दुकान और घर का बाल भी बांका न होगा, क्योंकि अल्लाह के महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है। चाहे दुकान मिट्टी की हो, अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है, तो ऐटम बम से ज़्यादा ताक़तवर है।

(हज़रत जी की यादगार तक़रीरें)

"बिलाल पार्क लाहौर" से सदाए ईमान

इसी तरीक़े अपने इंतिक़ाल से 18 घंटे पहले यानी एक अप्रेल 1965 ई० "बिलाल पार्क लाहौर" में मग़्रिब की नमाज़ के बाद हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब ने जो बयान फ़रमाया, इसे भी नीचे लिखा जा रहा है ताकि किसी तरह ये बातें हमारी समझ में आ जाए, हज़रत ने फ़रमाया–

﴿إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَٰئِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ﴾ (حم سجده:۳۰-۳۲)

जिन लोगों ने (दिल से) इक़रार कर लिया कि हमारा रब अल्लाह है, फिर (उस पर) मुस्तक़ीम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे कि तुम न अंदेशा करो और न रंज करो और तुम जन्नत (के मिलने) पर ख़ुश रहो जिसका तुमसे (पैग़म्बरों की मारफ़त) वायदा किया जाया करता था और हम तुम्हारे रफ़ीक़ थे दुन्यावी ज़िंदगी में भी और आख़िरत में भी रहेंगे। तुम्हारे लिए इस (जन्नत में) जिस चीज़ का तुम्हारा जी चाहेगा मौजूद है। और नीज़ तुम्हारे लिए इसमें जो मांगोगे मौजूद है।

यह बतौर मेहमानी के होगा गफ़ूर्रहीम की तरफ़ से।

अल्लाह रब है यह लफ़्ज नहीं बल्कि एक मेहनत है, जिस तरह कोई शख़्स अगर यह कहे, कि मैं दुकान से पलता हूं, या खेती से, मुलाज़मत से, या हुकूमत से पलता हूं, तो यह कहना लफ़्ज़ नहीं है बल्कि मेहनत है, इतना कहने के बाद मेहनत शुरू हो जाती है, कि ज़मीन ख़रीदता है हल चलाता है बीज डालता है, पानी लगाता है। ग़रज़ इस लफ़्ज़ के पीछे एक लम्बी–चौड़ी मेहनत की ज़िंदगी है। ठीक उसी तरह जब कोई यह कहे कि हमारे रब अल्लाह हैं, तो सिर्फ़ यह कहकर बात ख़त्म नहीं हुई, बल्कि शुरू हुई कि जब अल्लाह पालने वाले हैं तो ग़ैरों से पलने का यक़ीन दिल से निकालें, यह पहली मेहनत हुई कि मैं ज़मीन आसमान और उसके अंदर की चीज़ों से नहीं पलता बल्कि अल्लाह से पलता हूं। उनको मेहनत करके दिल का यक़ीन बनाना है। उस यक़ीन को रग व रेशा (पूरी तरह अपनी ज़िंदगी में लाने) के लिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी और आपका सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है।

'अल्लाह से पलता हूं' इस बोल की हक़ीक़त दिल में उतारने के लिए मुल्क और माल, तिजारत और खेती की मेहनत नहीं है, बल्कि इस लफ़्ज़ पर नबियों वाली मेहनत और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली मेहनत करनी होगी, यानी मेहनत करके इस हक़ीक़त तक पहुंचो, कि हमें सीधे–सीधे अल्लाह से पलना हैं, अल्लाह को पालने में खेती और दुकान की ज़रूरत नहीं है, वह अपने हुक्मों से पालते हैं। अगर यह हक़ीक़त दिल में पैदा हो जाए, तो अमरिका और रूस भी तुम्हारी जूतियों में होगा। बस शर्त इतनी है कि यह सिर्फ़ ज़बान के बोल न हो, बल्कि दिल के अंदर की हक़ीक़त हो, इसके लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर मेहनत करो। अल्लाह तर्बीयत करने वाले हैं अल्लाह को माबूद बनाकर अल्लाह की इबादत करके पलना है। अगर इबादत से पलने पर मेहनत करोगे तब दिल में उतरेगा, इबादत नमाज़ है नमाज़ तुम्हारे इस्तेमाल का अपना तरीक़ा है। ज़मीन या मोटर या जानवरों के तरीक़े का नाम नमाज़ नहीं है। बल्कि अपनी आंख, ज़बान, हाथ, पैर, कान, और दिमाग़ को इस तरह इस्तेमाल करना सीखो, जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्तेमाल किए हैं। नमाज़ क्या है? नमाज़ कायनात से नहीं बल्कि अल्लाह से दोनों दुनिया में लेने के वास्ते

हमारे अपने जिस्म के इस्तेमाल का तरीक़ा है। यह नमाज़ है कि सिर्फ़ अल्लाह हम को पालेगा, बस हमारे अपने जिस्म का इस्तेमाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर हो जाए।

(हज़रत जी की यादगार तक़रीरें)

एक मौक़े पर हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० ने यह भी फ़रमाया: कि लोगों को यह धोखा लगा है, कि मैं चीज़ों से पलता हूं अल्लाह चीज़ों से नहीं पालते हैं बल्कि हर एक को अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं। अल्लाह की क़ुदरत से फ़ायदा उठाने के लिए इबादत है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा को ज़ाहिर के ख़िलाफ़, अमल करके दुआ मांगकर अल्लाह की क़ुदरत के ज़रिए अपने सारे मसअलों को हल करना सिखलाया था। अल्लाह की क़ुदरत से फ़ायदा हासिल करने के लिए अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात का यक़ीन, अल्लाह की इबादत और अल्लाह के बंदों से हमदर्दी, ख़िदमते ख़ल्क़ और इख़्लास वाले अमल के ज़रिए सहाबा को दुआ की कुव्वत हासिल हो गई थी। दुआ एक ऐसी बुनियाद है कि माल से तो तुम नाकाम हो सकते हो, लेकिन तुम—

मालदार हो या मुफ़लीस
अमीर हो या फ़क़ीर
हाकिम हो या महकूम
बीमार हो या तंदरुस्त

हर सूरत में अल्लाह तआला तुमको दुआ के ज़रिए ज़रूर कामियाब करेगा। चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा रज़ि० को दुआ के रास्ते अपनी ज़रूरतों का पूरा कराना ख़ूब अच्छी तरह सिखलाया था। इंफ़िरादी और इज्तिमाई दोनों मसअलों में इनकी दुआएं ख़ूब चला करती थी।

(हज़रत जी की यादगार तक़रीरें)

मेरे दोस्तो! आज हमें ईमान के सीखने की ज़रूरत इसलिए नहीं है और हम ईमान को इसलिए नहीं सीख रहे हैं क्योंकि हमारे सारे काम पैसे से हो रहे हैं। इसलिए माल को कमाना, सीखना और फिर माल का कमाना, यह हमारी ज़िंदगी का मक़सद बन गया है।

बुखारी शरीफ़ की हदीस है जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: कि खुदा की कसम! मुझे तुम्हारे ऊपर फ़कर व फ़ाके (बहुत ज़्यादा ग़रीबी) का ख़ौफ़ नहीं है बल्कि इसका ख़ौफ़ है कि तुम पर दुनिया की वुसअत (फैलाव) हो जाए, जैसा कि तुमसे पहली उम्मतों पर हो चुकी है फिर तुम्हारा भी उसमें दिल लगने लगे जैसा कि उनका लगने लगा था, बस यह चीज़ तुम्हें भी हलाक कर देगी, जैसा कि पहली उम्मतों को कर चुकी है।

बड़े शर्म की बात है, कि जिस चीज़ को हमारे प्यारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस उम्मत का फ़ित्ना बतलाया हो, उसी चीज़ को आज हम मुसलमानों ने अपना रब और माबूद बनाया हुआ है। अब हमें कैसे पता चले कि हमने माल को माबूद बनाया हुआ है? तो इस बात को जानना बहुत आसान है। कैसे? तो वह इस तरह से कि जब तुम अपने घर में दाख़िल हो और तुम्हारे घर वाले तुमसे कहे कि घर में आटा ख़त्म हो गया, जाओ आटा लेकर आओ। तुम्हें फ़ौरन पैसे का ख़्याल आएगा, जिस जेब में है उस जेब का ख़्याल आएगा, जेब में नहीं है अलमारी में है तो अलमारी का ख़्याल आएगा अगर अलमारी में नहीं है, बैंक में है तो बैंक का ख़्याल आएगा। ग़रज़ यह है कि हर चीज़ का तो ख़्याल आएग पर रब का ख़्याल न आएगा। अब फ़ैसला करो कि हमने किसे अपना रब बनाया हुआ है?!! तो पता यह चलेगा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात सच्ची, कि हमने माल ही को अपना रब बनाया हुआ है और उसी को हासिल करने के लिए हमारा जीना और मरना है अपनी ज़बानों से तो यह कहते हैं–

चींटी से लेकर जिब्रील तक,
ज़मीन से लेकर आसमान तक,
ज़र्रे से लेकर पहाड़ तक,
क़तरे से लेकर समुंद्र तक,

किसी से कुछ नहीं होता, पर दिलों के अंदर माल का यक़ीन बैठा हुआ है, कि करने वाली ज़ात तो अल्लाह ही है पर माल के बग़ैर कुछ नहीं होगा इसलिए माल से चीज़ें और सामान मिलेगा और चीज़ों और सामान से काम बनेगा। हालांकि ये सारी दुनिया मुर्दार है तो भला मुर्दे से क्या होगा? यह सोचने वाली बात है कि

ख़बर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है कि ये सारी दुनिया मुर्दार है और—

इसको चाहने वाले,
इसको पाने वाले,
इसको हासिल करने वाले,
और इसकी तलब रखने वाले,

कुत्ते हैं इसलिए मुर्दार को कुत्तों के अलावा और कोई पसंद नहीं करता।

मेरे दोस्तो! जिस कायनात को बनाने के बाद अल्लाह ने फिर दोबारा इसे देखा न हो, आज ईमान न सीखने के वजह से हमने इसी से अपने मसअलों को जोड़ लिया।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि कोई बंदा अल्लाह के यहां चाहे जितनी इज़्ज़त और शरफ़ वाला हो, लेकिन दुनिया की कोई चीज़ या सामान उसको मिलता है तो उस चीज़ को लेने की वजह से अल्लाह के यहां उसका दर्जा कम हो जाता है।

(हुलीया, 1, 304)

तुम्हारे साथ वह होगा जो अंबिया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ हुआ

मेरे दोस्तो! जब हम ईमान को सीखते हुए दावत के आलिमी तक़ाज़ों को पूरा करते हुए, अपने जिस्म के हिस्सों को अल्लाह की मर्ज़ी पर इस्तेमाल करेंगे, जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्तेमाल करके दिखलाया है, तो फिर वह होगा, जो अंबिया और सहाबा किराम के साथ हुआ है। कि—

बनी इसराइल को 40 साल तक मन व सलवा आसमान से उतारकर दिखलाया।

हज़रत मरयम बिन इम्रान अलैहिस्सलाम को इनके कमरे में आसमान से फल उतारकर खिलाया।

बनी इसराइल को पत्थर से बारह चश्मे निकालकर पानी पिलाया।

हज़रत मूसा अलै० को जब उनकी मां ने लकड़ी के संदूक़ में बंद करके दरिया

नील में बहा दिया तो तीन दिन और तीन रात तक उन्हीं के हाथों से दूध और शहद निकालकर पिलाया।

हज़रत ईसा अलै० ने हव्वारीन को थाल में रखकर आसमान से पका हुआ खाना उतारकर खिलाया।

हज़रत इब्राहीम अलै० को जब नमरूद ने आग में फेंका तो आग को बाग बनाकर 40 दिन बाहर से नज़र आने वाली उस आग के अंदर ही आसमान से खाना उतारकर खिलाया। हज़रत इब्राहीम के मुक़ाबले पर आए हुए नमरूद और उसकी फ़ौज को मच्छरों से हलाक कराया।

अबरहा (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा के वक़्त यह अपने लश्कर के साथ बैतुल्लाह को ढाने आया था) के लश्कर को चिड़ियों से कंकरियां फिकवाकर तबाह करके दिखाया।

बनी इसराइल को दरिया–ए–नील में रास्ता बनाकर निकाला।

हज़रत यूसुफ़ अलै० को गुलाम से बादशाह बनाया।

हज़रत इसमाइल अलै० के लिए ज़म–ज़म निकाला।

हज़रत अय्यूब अलै० के सड़े हुए जिस्म को सही सालिम बनाया।

हज़रत ईसा अलै० को दुश्मन से बचाकर आसमान पर उठाया।

हज़रत सालेह अलै० की क़ौम के लिए पहाड़ से ऊंटनी को निकाला।

हज़रत यूनुस अलै० को 40 दिन मछली के पेट में रखकर बाहर निकाला।

हज़रत दाऊद अलै० के हाथों में लोहे को मोम बनाया।

हज़रत सुलैमान अलै० को तमाम मख़लूक़ पर बादशाह बनाया।

हज़रत ज़िक्रिया अलै० को बुढ़ापे में औलाद अता फ़रमाई।

हज़रत मूसा अलै० की लाठी को जादूगरों के सामने सांप बनाया।

हज़रत इब्राहीम अलै० की बीवी हज़रत सारा अलै० की इज़्ज़त बचाने के वास्ते *फ़िरऔन का जिस्म को पत्थर बनाया।*

बनी इसराइल के चेहरे को सूअर और बंदर बनाया।

हज़रत नूह अलै० की क़ौम को सैलाब में ग़र्क़ करके दिखलाया।

मेरे दोस्तो! अगर हम लोग भी अल्लाह के हुक्मों को मज़बूती से पकड़ लें तो

अल्लाह ज़ाहिर के ख़िलाफ़ अपनी क़ुदरत से तुम्हारी तुम्हारी ज़रूरतों को भी पूरा करेंगे। कि

कभी तुम्हारी ज़रूरत की चीज़ों को दूसरों से हदिया (तोहफ़ा) दिलाकर पूरा कराएगा।

कभी हज़रत मिक़्दाद रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह चूहे से सोना (अशरफ़ी) भिजवाएगा।

कभी हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा की तरह आसमान से पानी का भरा डोल उतारेगा।

कभी हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह बंद कमरे में आसमान से उतारकर अंगूर खिलाएगा।

कभी तुम्हारी चक्की से आंटा निकालकर खिलाएगा।

कभी हज़रत उम्मे साइब रज़ियल्लाहु अन्हा की तरह तुम्हारे मुर्दा बच्चे को ज़िंदा करेगा।

कभी हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह हाथ में पकड़ी हुई टहनी को तलवार बनाएगा।

कभी हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दौसी रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे कोड़े में रोशनी दाख़िल करेगा।

कभी हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे लिए दरिया को मुसख़्ख़र (ताबेदार, फ़रमांबरदार) करेगा।

कभी हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे लिए आग को मुसख़्ख़र (ताबेदार, फ़रमांबरदार) करेगा।

कभी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारी भी आवाज़ 300 मील दूर पहुंचाएगा।

कभी हज़रत आला हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे लिए समुंद को मुसख़्ख़र (ताबेदार, फ़रमांबरदार) करेगा।

कभी हज़रत हमज़ा बिन अम्र अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे हाथ की उंगलियों से टार्च की तरह रोशनी निकालेगा।

कभी हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह शेर से रहबरी (रास्ता दिखाना) कराएगा।

कभी सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम समुंद से गुबर (बहुत बड़ी मछली) भेजेंगे।

कभी हज़रत अबू मुअल्लिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे दुश्मन को हलाक करने के लिए चौथे आसमान के फ़रिश्तों को भेजेगा।

कभी हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे लिए भी सातवें आसमान से फ़रिश्तों को उतारकर तुम्हारी मदद के लिए भेजेगा।

कभी उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे कमरे में 300 अशरफ़ी (सोने के सिक्के) उतारेगा।

कभी बद्र और उहुद (इस्लाम की मशहूर जंगें) की तरह तुम्हारे लिए भी आसमानों से फ़रिश्तों को उतारेगा।

कभी हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे भी तोशेदान (उनका एक थैला जिसमें उन्होंने कुछ खजूरें रखी, जिसमें बहुत ज़्यादा बरकत हो गई थी) से 25 साल तक निकालकर खिलाएगा।

कभी उकाशा बिन मुहसिन रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारी भी लकड़ी को तलवार बना देगा।

- कभी रात के अंधेरे में एक साहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारी लाठी से रोशनी निकालकर टार्च की कमी को पूरा करेगा।

कभी हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह बारिश के पानी से सफ़र के दौरान भीगने से बचाएगा।

कभी हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे कहने पर शराब को सिरका बना देगा।

कभी हज़रत औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हें दुश्मन की क़ैद से रस्सी को खोलकर आज़ाद कराएगा।

कभी हिशाम बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह दुश्मन के हमले में 'ला इलाह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर' कहने पर इसका बालाख़ाना टूटकर गिर जाएगा।

गैबी (अल्लाह की मदद) निज़ाम

﴿وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ﴾

"तुम्हारे रब के लश्करों (फ़रिश्तों) को तुम्हारे रब की सिवा कोई नहीं जानता।

(सूरः मुद्दसिर)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है: अल्लाह तआला ने जो फ़रिश्ते पैदा फ़रमाए हैं, उनमें ग़ौर व फ़िक्र करो।

(तफ़्सीर कश्शाफ़, हदीस 1193)

हज़रत जाबिर बिन अबदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: सातों आसमानों में एक बालिश्त के बराबर कोई ऐसी जगह नहीं है, जहां पर फ़रिश्ते न हों, कोई क़ियाम में कोई रूकूअ में, कोई सज्दे में। पस जब क़ियामत का दिन होगा, तो सब मिलकर अर्ज़ करेंगे (ऐ अल्लाह!) आपकी ज़ात पाक है, हमने आपकी इबादत इस तरह नहीं की जिस तरह आपकी इबादत करने का हक़ था। हां, यह ज़रूर है कि हमने आपके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराया।

(इब्ने अबी हातिम)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह की मख़्लूक़ में फ़रिश्तों से ज़्यादा कोई मख़्लूक़ नहीं है। ज़मीन पर कोई चीज़ ऐसी नहीं उगती जिसके साथ एक मौकिल फ़रिश्ता न होता हो।

(अबू शैख़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को नूर से पैदा किया, फिर उसमें रूह डाली। पस फ़रिश्ते पैदाइश के एतबार से

मक्खी से भी छोटे हैं, पर उनकी तायदाद गिनती के एतबार से हर चीज़ से ज़्यादा है।

(मुस्नद बज़्ज़ार)

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मेराज में जब मैं (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और जिब्रील अलै० पहले आसमान पर पहुंचे तो वहां इस्माइल नाम का एक फ़रिश्ता मिला, जो पहले आसमान के फ़रिश्तों का सरदार है। उसके सामने सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हैं। उनमें से एक के साथ में एक-एक लाख फ़रिश्तों की जमाअत है।

(इब्ने अबी हातिम)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

फ़रिश्तों को नूर से पैदा किया गया।
जिन्नात को भड़कती हुई आग से पैदा किया गया।
आदम को उस चीज़ से पैदा किया जिसकी सिफ़त अल्लाह तआला तुममें बयान फ़रमाई है। (यानी मिट्टी से)

(मुस्लिम किताबुल-ज़ाहिद)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि (मलाकुल मौत) को इंसानों की रूह निकालने का काम सौंपा गया है। जिन्नात के लिए और फ़रिश्ते मुक़र्रर है। शैतानों, परिंदों, मछलियों और चींटियों की रूह निकालने के लिए दूसरे फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं।

(जुवेबरफ़ी तफ़सीर मा)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि (एक बार हम लोगों पर) बादल ने साया किया, तो हमने उससे (बारिश की) उम्मीद की तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो फ़रिश्ता बादलों को चलाता है वह अभी हाज़िर हुआ था, उसने मुझे सलाम किया और बतलाया कि वह इस बादल को यमन की वादी की तरफ़ ले जा रहा हूं, उस जगह का नाम ज़राह है। जहां

इसका पानी बरसेगा।

(अबू उवाना)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं यहूदी लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए तो और कहने लगे ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! हमें बतलाइये यह 'रअद' क्या है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "रअद" अल्लाह के फ़रिश्तों में एक फ़रिश्ता है, जो बादलों की निगरानी करता है उसके हाथ में आग का कोड़ा है, जिससे बादलों को तंबीह करता है। और जहां का अल्लाह तआला उसको हुक्म देते हैं, वहां (बादलों को) ले जाता है। "बरक़" इस फ़रिश्ते का बादल को कोड़ा मारना है। यहूदियों ने कहा, आपने सच फ़रमाया।

(अहमद, तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कि 'रअद' वह फ़रिश्ता है, जो बादलों को तंबीह से चलाता है, जिस तरह ऊंटों को गा कर हाकने वाला हकाता है। उसी तरह वह बादलों को डांटता है, जिस तरह चरवाहा अपनी बकरियों को डांटता है।

(इब्ने मुन्ज़िर, इब्ने अबी दुनिया)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से "रअद" के बारे में सवाल किया गया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने 'रअद' बादलों को चलाने की ज़िम्मेदेरी सुपुर्द की है। पस जब अल्लाह तआला इरादा फ़रमाते हैं कि किसी बादल को किसी जगह भेजें तो रअद को हुक्म फ़रमाते हैं और वह बादलों को चलाकर वहां ले जाता है और जब बादल बिखरता है तो वह अपनी आवाज़ से डांटता है, यहां तक कि वह फिर मिल जाता है, जिस तरह तुममें से कोई आदमी अपनी रकाबों को जमा करता है।

(अबू शैख़)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मलाकुल मौत जो सारे ज़िंदा इंसानों की रूह निकालता है वह सारे ज़मीन वालों पर इस तरह मुसल्लत है, जिस तरह से तुममें से हर एक आदमी अपनी हथेली पर मुसल्लत होता है

मलाकुल मौत के साथ रहमत और आज़ाब दोनों क़िस्म के फ़रिश्ते होते हैं, जब किसी पाकीज़ा नफ़्स की वफ़ात देता है तो उसके पास रहमत वाले फ़रिश्ते भेजता है और ना–फ़रमान की रूह निकालने के लिए उसकी तरफ़ आज़ाब के फ़रिश्ते भेजता है।

(जुबैर)

हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इंसान उस वक़्त तक नहीं रोता, जब तक कि उसके पास एक फ़रिश्ता नहीं भेजा जाता। वह फ़रिश्ता आकर उसके दिल पर अपना पर रगड़ता है, उसके पर रगड़ने से इंसान रोने लगता है।

(इब्ने असाकीर)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कुछ फ़रिश्ते ऐसे भी हैं, जो पेड़ों से गिरने वाले पत्ते तक को लिखते रहते हैं। सो! तुममें से जब कोई किसी इलाक़े में रास्ता भटक जाए और कोई मददगार न मिलें तो उसके चाहिए कि बुलंद आवाज़ से यह कहें–

'ऐ अल्लाह के बंदो! हमारी मदद करो!।

अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए'।

तो उसकी मदद की जाएगी।

(तबरानी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि समुंद्र एक फ़रिश्ते की गिरफ़्त में है। अगर वह इससे ग़ाफ़िल हो जाए, तो उसकी मौजें ज़मीन पर टूट पड़ें।

(इब्ने अबी हातिम)

हज़रत ज़मरा बिन हबीब रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं, कि किसी बंदे के अमल को लेकर जब फ़रिश्ते आसमान पर पहुंचते हैं, जिसे वह बड़ा और पाकीज़ा समझते हैं, तो अल्लाह तआला उनकी तरफ़ वही फ़रमाते हैं कि तुम मेरे बंदों के अमल के निगराह हो, लेकिन उनके दिलों में क्या है, यह सिर्फ़ मैं जानता हूं। मेरे बंदे ने यह अमल मेरे लिए नहीं किया। इसलिए यह अमल सज्जीन (सातों के ज़मीन के नीचे एक आलम है) में फेंक दो।

इसी तरह किसी और बंदे का अमल लेकर जब फ़रिश्ते आसमान पर पहुंचते हैं। तो अल्लाह तआला उनकी तरफ़ वही फ़रमाते। कि तुम अमल के निगरां हो, लेकिन उसके दिल में क्या है? यह मैं जानता हूं। इस अमल को कई गुना कर दो और इसे अलय्यीन में इसके लिए रख दो।

(दुर्रे मंसूर, 2, 325)

हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमायाः अगर तुम्हारा हाल वैसे रहे, जैसा मेरे पास रहने पर होता है, या हर वक़्त तुम अल्लाह के ज़िक्र में मश्गूल रहो, तो फ़रिश्ते तुम्हारे बिस्तरों पर और तुम्हारे रास्तों में तुम्हारे पास जाकर तुमसे मुसाफ़ा करने लगें, लेकिन ऐ हंज़ला! यह कैफ़ियत धीरे-धीरे पैदा होती है।

(मुस्लिम)

हज़रत उम्मे औसिया रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः कोई मुसलमान जब गुनाह करता है, गुनाह लिखने वाला फ़रिश्ता जो उसके कंधे पर मौजूद है, वह गुनाह को लिखने से तीन घड़ी ठहर जाता है, ताकि गुनाह करने वाला शायद उस बीच तौबा कर ले।

(मुस्तदरक हाकिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम मुर्गे की आवाज़ सुनों तो अल्लाह तआला से उसके फ़ज़्ल का सवाल करो, क्योंकि मुर्गे फ़रिश्ते को देखकर आवाज़ देते हैं और जब तुम गधों की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो, क्योंकि गधे शैतान को देखकर बोलते हैं।

(बुख़ारी)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जब तुममें से कोई सोने के लिए बिस्तर पर जाता है तो एक फ़रिश्ता और एक शैतान उसके पास आता है। शैतान कहता है कि अपने जागने के वक़्त को बुराई पर ख़त्म कर, और फ़रिश्ता कहता है कि उसे भलाई पर ख़त्म कर।

अब अगर वह अल्लाह का ज़िक्र करके सोया है, तो शैतान उसके पास से चला जाता है और एक फ़रिश्ता रात भर उसकी हिफ़ाज़त करता रहता है। फिर जब वह सोकर उठता है, तो फिर से एक फ़रिश्ता और शैतान उसके पास आते है। शैतान उससे कहता है कि अपने जागने को बुराई से शुरू कर और फ़रिश्ता कहता है कि अपने दिन को भलाई से शुरू कर।

(मुस्नद अहमद)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः 'सूर' फूकने वाला फ़रिश्ता इसराफ़ील अलै० 'सूर' को अपने मुंह में रखे हुए पेशानी झुका कर इस बात का इंतिज़ार कर रहा है कि कब इसे सूर के फूंकने का हुक्म मिले और वह सूर को फूंक दे।

(कंज़ुल उम्मालः 7 270)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने पानी के ख़ज़ाने पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है। उस फ़रिश्ते के हाथों में एक पैमाना है, उस पैमाने से गुज़र कर ही पानी की हर बूंद ज़मीन पर आती है। लेकिन हज़रत नूह अलै० के तौफ़ान वाले दिन ऐसा न हुआ बल्कि अल्लाह ने सीधे पानी को हुक्म दिया और पानी को संभालने वाले फ़रिश्ते को हुक्म न दिया। जिस पर वह फ़रिश्ते पानी को रोकते रह गए, लेकिन पानी न रूका।

(कंज़ुल उम्मालः 1, 273)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया शबे क़द्र की रात को अल्लाह तआला हज़रत जिब्रील अलै० को हुक्म फ़रमाते हैं कि ज़मीन पर जाओ!

हज़रत जिब्रील अलै० फ़रिश्तों की एक बहुत बड़ी जमाअत के साथ ज़मीन पर उतरते हैं। उनके साथ हरे रंग का झंडा होता है, जिसको यह काबा शरीफ़ के ऊपर लगाते हैं। फिर अपने साथ आए हुए फ़रिश्तों के साथ कहते हैं, कि तुम लोग सारी दुनिया में फैल जाओ और जहां पर भी जो मुसलमान आज की रात में खड़ा हो या बैठा, नमाज़ पढ़ रहा हो या ज़िक्र कर रहा हो, तो उसको सलाम करो और मुसाफ़ा करो और उनकी दुआओं पर आमीन कहो। सुबह तक यह सिलसिला

जारी रहता है। फिर जब सुबह हो जाती है तो हज़रत जिब्रील अलै० आवाज़ देते हैं 'ऐ फ़रिश्तों की जमाअत अब वापस आसमान की तरफ़ चलो, तो सारे फ़रिश्ते हज़रत जिब्रील अलै० से साथ आसमान पर वापस चले जाते हैं।

(मिश्कात शरीफ़, 206)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जुम्आ के दिन फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होकर, मस्जिद में आने वालों के नाम लिखते रहते हैं। लेकिन जब ख़ुत्बा शुरू होता है, तब फ़रिश्ते नाम लिखना बंद करके ख़ुत्बा सुनने में मश्ग़ूल हो जाते हैं।

(बुख़ारी)

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया जब नमाज़ की सफ़ें खड़ी हो जाती हैं, तो आसमानों के, जन्नत के और जहन्नम के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं। जन्नत की सजी हूरें ज़मीन पर झांकती है।

(हैसमी, 5. 284)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स नमाज़ के इंतिज़ार में रहता है, फ़रिश्ते इसके लिए दुआ करते रहते हैं।

(बुख़ारी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब नमाज़ का वक़्त होता है। उस वक़्त एक फ़रिश्ता ऐलान करता है कि 'ऐ आदम की औलाद! उठो और जहन्नुम की जिस आग को तुमने अपने गुनाहों कि वजह से जला रखा है इसे बुझा लो।

(तबरानी)

हज़रत उस्मान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो शख़्स नमाज़ की हिफ़ाज़त करे और वक़्त की पाबंदी के साथ इसका एहतिमाम करे। तो फ़रिश्ते उस शख़्स की हिफ़ाज़त करते हैं।

(मुनब्बेहात)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने फ़रमाया जब बंदा मिस्वाक करके नमाज़ के लिए खड़ा होता है, तो एक फ़रिश्ता इसके पीछे आकर खड़ा हो जाता है, और उसकी क़िरात खूब ध्यान से सुनता है, फिर उसके बहुत क़रीब हो जाता है, यहां तक कि उसके मुंह पर अपना मुंह रख देता है। कुरआन का जो भी लफ़्ज़ उस नमाज़ी के मुंह से निकलता है, सीधा फ़रिश्ते के पेट में पहुंचता है।

(बज़्ज़ार)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब नमाज़ के लिए आज़ान दी जाती है, तो शैतान ऊंची आवाज़ में रीहा ख़ारिज करते हुए पीठ फेरकर भाग जाता है। आज़ान के ख़त्म होने पर वापस आ जाता है। जब इक़ामत कही जाती हो फिर भाग जाता है। इक़ामत हो जाने पर फिर वापस आ जाता है, ताकि नमाज़ी के दिल में वसवसे डाले। नमाज़ी को कभी कोई बात याद कराता है, तो कभी कोई बात, ऐसी-ऐसी बातें याद दिलाता है, जो बातें नमाज़ी के नमाज़ से पहले याद न थीं, यहां तक कि नमाज़ी को यह भी ख़्याल नहीं रहता, कि कितनी रक्आतें हुई हैं।

(मुस्लिम)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया नमाज़ की सफ़ों को सीधा रखा करो, कंधों को कंधों की सीध में रखा करो, सफ़ों को सीधा रखने में अपने भाइयों के लिए नर्म बन जाया करो और सफ़ों के बीच पड़ी खाली जगहों को भर लिया करो, क्योंकि शैतान सफ़ों में ख़ाली जगह देखकर भेड़ के बच्चे की तरह बीच में घुस जाता है।

(तबरानी)

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिस गांव या जंगल में तीन आदमी हों और वहां जमाअत से नमाज़ न होती हो, तो उन लोगों पर शैतान ग़ालिब हो जाता है, इसलिए जमाअत से नमाज़ पढ़ने को ज़रूरी समझो, भेड़िया अकेले बकरी को खा जाता है। (और आदमियों का भेड़िया शैतान है)।

(अबूदाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुममें से जब कोई शख़्स सोता है, तो शैतान उनकी गद्दी पर तीन गिरहें लगा देता है और हर गिरह पर यह फूंक देता है 'सोते रहो,' अभी रात बहुत पड़ी है। अगर इंसान जागकर अल्लाह का नाम लेता है। तो एक गिरह खुल जाती है। अगर वुज़ू कर लेता है, तो दूसरी गिरह खुल जाती है फिर अगर तहज्जुद पढ़ लेता है, तो तमाम गिरहें खुल जाती हैं।

(अबूदाऊद)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि नमाज़ में इधर-उधर देखना कैसा है? इर्शाद फ़रमाया यह शैतान का आदमी को नमाज़ से उचक लेना है।

(तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब तुममें से कोई सूरः फ़ातिहा के आख़िर में आमीन कहता है तो उसी वक़्त फ़रिश्ते आसमान पर से आमीन कहते हैं जिस शख़्स की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के साथ मिल जाती है तो उसके पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

(बुख़ारी)

हज़रत उवैस अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ईद की सुबह अल्लाह तआला फ़रिश्तों को दुनिया के तमाम शहरों में भेजते हैं। वह ज़मीन पर उतरकर तमाम गलियों और रास्तों में खड़े हो जाते हैं और आवाज़ देकर कहते हैं, जिसे इंसान और जिन्नात के अलावा सारी मख़लूक़ सुनती है कि 'ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! की उम्मत इस करीम रब की बारगाह की तरफ़ चलो, जो ज़्यादा अता करने वाला है। फिर लोग ईदगाह की तरफ़ जाने लगते हैं। ।

(तबरानी)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया नमाज़ पढ़ने वाले के दाएं और बाएं एक-एक फ़रिश्ता होता

है। पस अगर वह (नमाज़ी) अपनी नमाज़ ईमान और एहतिसाब के साथ अदा किया तो वह फ़रिश्ता नमाज़ को लेकर आसमानों के ऊपर चले जाते हैं और अगर ना-मुकम्मल अदा किया, तो नमाज़ को उसके मुंह पर मार देते है।

(तर्गीब व तरहीब, 1, 338)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाह अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया तुम्हारे पास रात के फ़रिश्ते और दिन के फ़रिश्ते आते रहते हैं। यह फजर और असर की नमाज़ के वक़्त जमा होते हैं। फिर जिन्होंने तुम्हारे साथ रात गुज़ारी थी, वह ऊपर चले जाते हैं।

(बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुबारक हो, वुज़ू में ख़लाल करने वाले को, मुबारक हो, खाने में खलाल करने वाले को।

वुज़ू में खलाल--

कुल्ली करना,

नाक में पानी चढ़ाना,

और (हाथ, पांव की) उंगलियों के दरमियान ख़लाल करना।

और खाने में ख़लाल यह है कि कोई चीज़ खाने की दांतों में रह जाए, तो उसको साफ़ करना, क्योंकि यह इन दोनों फ़रिश्तों के लिए ज़्यादा तक्लीफ़ दे है, कि वह अपने साथी के दांतों में खाने की कोई चीज देखें, जब वह नमाज़ पढ़ रहा हो।

(मुस्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि दिन के करामन कातीबीन अलग हैं और रात के अलग। चूंकि दिन के फ़रिश्ते मग़्रिब की नमाज़ को पूरे तौर पर अदा करने के बाद ही आसमान पर वापस जाते हैं। इसलिए अगर मग़्रिब की दो रकआत सुन्नत में देर की गई, तो यह इन फ़रिश्तों पर भारी हो जाती है। लिहाज़ा मग़्रिब की फ़र्ज़ अदा करने

के बाद इन सुन्नतों की अदाएगी में देर न किया करो।

(देलमी)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो आदमी बग़ैर इल्म के फ़तवे देता है। इस पर आसमान और ज़मीन के फ़रिश्ते लानत करते हैं।

(इब्ने असाकिर)

हज़रत सफ़वान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया इल्म सीखने वाले को मुबारकबाद दो, क्योंकि इल्म सीखने वाले को फ़रिश्ते अपने परों से घेर लेते हैं। इतना ही नहीं बल्कि ऊपर तले जमा होते होते आसमान तक पहुंच जाते हैं।

(तबरानी)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने मलाकुल मौत को सारे इंसानों की रूह निकालने के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है, सिवाए समुंद्र में शहीद होने वालों की रूहों को अल्लाह तआला अपने हुक्म से निकालते हैं।

(इब्ने माजा, 2668)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर तुम मौत और उसके फ़ैसले को जान लो, तो उम्मीद और उसके धोखे से नफ़रत करने लगो, किसी भी घर के लोग ऐसे नहीं हैं, कि जिन पर मलाकुल मौत रोज़ाना तंबीह न करता हो। जब किसी की उम्र पूरी हो चुकी होती है, तो मलाकुल मौत उसकी रूह निकाल लेते हैं, जब उसके रिश्तेदार रोते हैं, तो वह कहता है तुम लोग क्यों रो रहे हो?

अल्लाह की क़सम न तो मैंने उसकी उम्र में से कुछ कम किया है, और न ही रिज़्क़ में से मेरा कोई क़ुसूर नहीं है, मुझे तो तुम लोगों के पास भी आना है यहां तक कि तुममें से किसी को भी नहीं छोडूंगा।

(देलमी)

हज़रत ज़ुबैर इब्ने अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, हर सुबह जब सोकर लोग उठते हैं उस वक़्त एक फ़रिश्ता आवाज़ देता है, कि ऐ मख़्लूक़ात! तुम सब अल्लाह तआला की तस्बीह करना शुरू करो।

(मुस्नद अबू याला)

हज़रत अबू उमाम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं, कि मेरे फ़्लां बंदे के पास जाओ और उस पर यह सख़्त मुसीबत पलट दो, तो उसके पास जाते हैं और उस पर मुसीबत डालते हैं। वह बंदा जब अल्लाह तआला की तारीफ़ बयान करता है, तो यह फ़रिश्ते लोट जाते हैं और अल्लाह तआला से अर्ज़ करते हैं कि हम ने उस पर मुसीबत डाल दी थी, जिस तरह आपने हुक्म दिया था।

तो अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं, वापस लोट जाओ और उससे मुसीबत हटा दो, क्योंकि मैं पसंद करता था कि उसकी आवाज़ सुनो, कि वह इस मुसीबत के हाल में मुझे किस तरह याद करता है? हालांकि अल्लाह तआला सब कुछ जानते हैं, कि वह मेरी तारीफ़ ही करेगा, लेकिन इस हालत में इस ज़ुबान से शुक्र का कलिमा कहलाना और उसका सुनना मक़सूद है।

(तबरानी)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, रात के आख़िरी हिस्से में क़ुरआन की तिलावत करने पर फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं।

(तिर्मिज़ी)

हज़रत माक़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सूरः बक़र की तिलावत करने पर उसकी हर आयत के साथ अस्सी फ़रिश्ते आसमान से उतरते हैं।

(मुस्नद अहमद)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, फ़रिश्तों की एक ऐसी जमाअत है, जो सिर्फ़ ज़िक्र के हल्क़ों की तलाश में रहती है, जब वह ज़िक्र करने वाले हल्क़ों को पा लेती है, तो उन्हें

अपने परों से ढांपकर अपना एक क़ासिद आसमान पर अल्लाह तआला के पास भेजते हैं। वह फ़रिश्ता उन सब की तरफ़ से अर्ज़ करता है। ऐ हमारे रब! हम आपके इन बंदों के पास आए हैं, जो आपकी नेमतों की बड़ाई कर रहे हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, उनको मेरी रहमत से ढांप दो फ़रिश्ता कहता है ऐ हमारे रब उनके साथ एक गुनाहगार बंदा भी बैठा है, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, उसको भी मेरी रहमत से ढांप दो, क्योंकि यह ऐसी मज्लिस है कि इनमें बैठने वाला कोई भी हो, वह महरूम नहीं होता।

(बज़्ज़ार)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स अपने घर से निकलते वक़्त,

"بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ"

कह कर निकलता है, तो फ़रिश्ते उससे कहते हैं, कि तुम्हारे काम बना दिए गए और हर शर से तुम्हारी हिफ़ाज़त की गई। फिर शैतान उससे दूर हो जाता है।

(तिर्मिज़ी)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स अपने बिस्तर पर पहुंचकर आयतुल कुर्सी पढ़कर सो जाता है, अल्लाह तआला उसकी हिफ़ाज़त के लिए फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देते है। जो रात भर उसकी हिफ़ाज़त करता रहता है।

(बुख़ारी)

हज़रत माक़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स सुबह को तीन बार,

"اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ"

पढ़ कर सूरः हश्र की तीन आयतें पढ़ ले,

هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ هُوَ اللّٰهُ
الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلٰمُ
الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ
الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ
لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ

तो अल्लाह तआला उसके लिए सत्तर हज़ार (70,000) फ़रिश्ते मुक़र्रर कर देते हैं, जो शाम तक रहमत भेजते रहते हैं।

(तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, घर में जैसे ही आयतुल कुर्सी पढ़ी जाती है, फ़ौरन उस घर से शैतान निकल जाता है।

(तर्ग़ीब)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स घर से निकलकर–

"بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ"

कह ले, तो शैतान उन बोल को सुनकर उसके पास से चला जाता है।

(तिर्मिज़ी)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिस शख़्स ने खाना–खाने पर 'बिस्मिल्लाह' न कहा तो शैतान को उसके साथ खाने का मौक़ा मिल जाता है।

(मिश्कात शरीफ़)

हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स सुबह दस मर्तबा चौथा कलिमा पढ़ लेता है, तो शाम तक शैतान से उसकी हिफ़ाज़त होती है और अगर शाम को पढ़ लेता है, तो सुबह तक शैतान से उसकी हिफ़ाज़त होती है।

(इब्ने हब्बान)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो लोग अल्लाह के ज़िक्र के लिए किसी जगह पर जमा हो और उनके जमा होने की ग़रज़ अल्लाह को ख़ुश करना है, तो एक फ़रिश्ता आसमान से पुकार कर कहता है, कि तुम लोग बख़्श दिए गए और तुम्हारे गुनाहों को नेकियों में बदल दिया गया है।

(तबरानी)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, रमज़ान की हर रात को एक फ़रिश्ता आवाज़ देकर कहता है, कि 'ऐ ख़ैर की तलाश करने वालो! मुतवज्जोह हो और आगे बढ़ो और ऐ बुराई के तलबगार! बस करो और आंखें खोलो'।

इसके बाद वह फ़रिश्ता कहता है, कि है कोई माफ़ी मांगने वाला, जिसको माफ़ किया जाए और है कोई मांगने वाला जिसका सवाल पूरा किया जाए।

(तर्ग़ीब)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब कोई अपनी बीवी के पास आए और–

"اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَارَزَقْتَنَا"

पढ़कर हमबिस्तरी करे, तो अगर उस रात की सोहबत से बच्चा पैदा हुआ, तो शैतान कभी नुक़सान नहीं पहुंचा सकेगा।

(बुख़ारी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तुममें से कोई छिंकता है और छिंक कर–

"اَلْحَمْدُلِلّٰهِ"

कहता है, तो फ़रिश्ते–

"رَبِّ الْعَالَمِيْنَ"

कहते हैं। लेकिन जब छिंकने वाला–

(اَلْحَمْدُ)

को

"رَبِّ الْعَالَمِيْنَ"

समेत कहता है, तो फ़रिश्ते कहते हैं–

"يَرْحَمُكَ اللهُ"

यानी अल्लाह तआला तुझ पर रहमत फ़रमाए।

(बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब बंदा कुरआन मजीद ख़त्म करता है, तो ख़त्म के वक़्त उसके लिए साठ (60,000) फ़रिश्ते रहमत व मग़फ़िरत के लिए दुआ करते हैं।

(दैलमी)

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जुम्आ के दिन ख़ूब कसरत से दुरूद पढ़ा करो, क्योंकि वह हाज़िरी का दिन है, उसमें फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं, लिहाज़ा जो कोई मुझ पर दुरूद भेजता है, उसका दुरूद मुझ तक पहुंचा दिया जाता है।

(इब्ने माजा शरीफ़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, सुबह के वक़्त एक फ़रिश्ता सारी मख़्लूक़ से जब तस्बीह पढ़ने को कहता है, तो परिंदे उसकी आवाज़ सुनकर अपने परों को फड़फड़ाने लगते हैं।

(अबू शैख़ हदीस, 530)

हज़रत लूत बिन अज़ा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, रात के वक़्त घर में पेशाब को किसी चीज़ में करके न रखा जाए,

क्योंकि रहमत के फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते, जिस घर में पेशाब रखा हो।

(मोजम औसत तबरानी)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उस क़ौम में फ़रिश्ते नाज़िल नहीं होते, जिस क़ौम में कोई क़तअ–रहमी (रिश्तेदारी को ख़त्म करने वाला) करना वाला हो।

(तबरानी)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिस घर में नापाकी की हालत वाला इंसान हो, वहां रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते।

(अबू दाऊद)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तक तुममें से किसी का दस्तरख़्वान मेहमान के आने जाने की वजह से सामने रखा रहता है। तो तुम पर उस वक़्त तक फ़रिश्ते लगातार रहमत और बरकत की दुआ करते रहते हैं।

(जामेअ सग़ीर, 2928)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने लहसन प्याज़ खाया हो, वह हमारी मस्जिद में हरगिज़ न आए, क्योंकि फ़रिश्तों को भी इस चीज़ की बू से तक्लीफ़ होती है, जिससे इंसान को तक्लीफ़ होती है।

(बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हर इंसान के सर पर पोशीदा (छुपी हुई) तौर पर एक लगाम है, जिस लगाम को एक फ़रिश्ते ने पकड़ा हुआ है जब इंसान तवाज़ोह करता है तो फ़रिश्ते उस लगाम को बुलंद कर देता है और जब इंसान तकब्बुर करता है, तो फ़रिश्ते उस लगाम को पस्त कर देता है।

(तबरानी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब लड़की पैदा होती है, तो अल्लाह तआला उस लड़की के पास एक फ़रिश्ता भेजता है, जो उस पर बहुत ज़्यादा बरकत उतारता है और कहता है, तू कमज़ोर है, क्योंकि कमज़ोर से पैदा हुई है। उस लड़की की किफ़ालत (परवरिश) करने वाले की क़ियामत तक मदद की जाती है और जब लड़का पैदा होता है तो अल्लाह तआला उसके पास एक फ़रिश्ता भेजते हैं जो उसकी आंखों के बीच बोसा लेता है और कहता है कि 'अल्लाह तुझे सलाम कहते हैं'।

(मोजम औसत तबरानी)

हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर मुसलमान क़ाज़ी के साथ दो ऐसे फ़रिश्ते होते हैं, जो उस क़ाज़ी को हक़ की रहनुमाई करते हैं, जब तक वह ख़िलाफ़े हक़ का इरादा न करे। अगर उसने जानबूझकर ख़िलाफ़े हक़ का इरादा किया और ज़ुल्म व ज़्यादती की, तो ये दोनों फ़रिश्ते उस क़ाज़ी को उसके नफ़्स के सुपुर्द करके उससे दूर हो जाते हैं।

(तबरानी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब कोई औरत अपने शोहर का बिस्तर छोड़कर नाफ़रमानी करते हुए अलग सोती है तो फ़रिश्ते उस पर उस वक़्त तक लानत करते रहते हैं, जब तक वह वापस शोहर के बिस्तर पर न आ जाए।

(बुख़ारी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अपने जूते अपने पावं के दर्मियान रखो, या अपने सामने रखो, अपने दाहिने न रखो, क्योंकि एक फ़रिश्ता तुम्हारे दाहिने है और बाहिने भी न रखो, क्योंकि वह जूते, तेरे भाई मुसलमान के दाएं होंगे।

(सईद बिन मंसूर)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि जब मुसलमान के जिस्म में कोई बीमारी भेजी जाती है, तो

अल्लाह तआला किरामन कातीबीन को हुक्म फ़रमाते हैं कि मेरे बंदे के लिए हर दिन और हर रात इतने नेक अमल लिखो, जितना वह बीमारी से पहले किया करता था। जब तक यह मेरी गिराह में बंधा हुआ है।

(इब्ने अबी शैबा)

हज़रत मकहूल रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई इंसान बीमार होता है, तो बाएं तरफ़ के गुनाह लिखने वाले फ़रिश्ते को अल्लाह तआला यह हुक्म देते हैं, कि अपना क़लम उठा ले और दाहिने तरफ़ वाले फ़रिश्ते से यह कहा जाता है, कि इस बंदे के अच्छे आमाल लिखते रहो, जो यह तंदुरुस्ती की हालत में किया करता था। क्योंकि इसकी आने वाली हालत को मैं जानता हूं मैंने ही उसे इस हाल में मुब्तला किया है।

(इब्ने असाकीर)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, तुममें से जब कोई अपनी बीवी के पास जाए, तो उसे चाहिए कि पर्दा कर ले अगर वह हमबिस्तरी के वक़्त पर्दा नहीं करेगा, तो फ़रिश्ते हया करते हैं और घर से निकल जाते हैं, फिर शैतान आ जाता है, पस अगर उन दोनों के लिए उस दिन की सोहबत से कोई औलाद लिखी है तो उसमें शैतान का भी हिस्सा हो जाता है।

(शैबुल ईमान)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या मैंने तुम लोगों से कपड़े हटाने को मना नहीं किया है? तुम्हारे साथ ये दोनों फ़रिश्ते जो तुमसे अलग नहीं होते हैं, न नींद में, न बेदारी में। याद रखो! जब भी तुममें से कोई अपनी बीवी के पास जाए या पेशाब पाख़ाना जाए तो उन दोनों से शर्म करे। ख़बरदार!! इन दोनों की इज़्ज़त करो।

(बैहक़ी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! अल्लाह तआला तुम्हें कपड़े उतार

देने से मना फ़रमाते हैं। तुम अल्लाह के उन फ़रिश्तों से हया करो, जो करामन कातिबीन तुम्हारे साथ रहते हैं। वे तुमसे अलग नहीं होते, सिवाए तीन वक़्तों के, जो तुम्हारी ज़रूरत है,

1. पेशाब, पाख़ाने के वक़्त,
2. बीवी से सोहबत के वक़्त,
3. गुस्ल करते वक़्त,

(मुस्नद बज़्ज़ार)

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जिसने अपना शर्म का हिस्सा खोला, उससे फ़रिश्ते अलग हो जाते हैं।

(मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, जो आदमी गुस्लख़ाने में बग़ैर तहबंद के दाख़िल होता है तो करामन कातिबीन उस पर लानत करते हैं।

(दैलमी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, एक फ़रिश्ता क़ुरआन के सुपुर्द है, पस जो शख़्स क़ुरआन की तिलावत तो करता है, लेकिन सही तरीक़े से तिलावत नहीं करता। उसको यह फ़रिश्ता दुरुस्त करके अल्लाह की बारगाह में पेश करता है।

(फ़ैज़ुल कबीर हदीस)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, एक फ़रिश्ता—

कहने वाले आदमी के सुपुर्द किया गया, जब यह इस कलिमे को तीन बार कहता है, तो फ़रिश्ता उससे कहता है, ऐ इंसान!

यानी अल्ला तआला तेरी तरफ़ मुतवज्जोह है जो चाहे उससे मांग तेरी दुआ क़बूल होगी। (मुस्तदरक हाकिम)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब कोई आदमी तिजारत या सरदारी का मामला तलब करता है, फिर उस पर क़ादिर हो जाता है, तो अल्लाह तआला सातों आसमानों के ऊपर इसका ज़िक्र करते हैं और इसके पास एक फ़रिश्ता भेजते हैं, कि मेरे बंदे के पास जाओ और उसे इस काम से रोको, अगर मैंने इसके लिए उसे अता कर दिया, तो इसकी वजह से जहन्नम में डाल दूंगा। तो वह उसे उससे अलग कर देता है। (शुऐबुल ईमान, बैहक़ी)

हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है, तो खाने से फ़ारिग़ होने तक, उस रोज़ेदार के लिए फ़रिश्ते रहमत की दुआ करते रहते हैं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो मुसलमान किसी मुसलमान की सुबह को अयादत (अल्लाह की रज़ा के लिए एक–दूसरे से मुलाक़ात करना) करता, तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते हैं। इसी तरह जो शाम को अयादत करता है तो सुबह तक सत्तर हजार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते हैं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मुसलमान की दुआ, अपने मुसलमान भाई के लिए अपने पीठ पीछे क़बूल होती है। दुआ करने वाले के सर के पास एक फ़रिश्ता मुक़र्रर है, जब भी यह दुआ करने वाला अपने भाई के लिए दुआ करता है, तो फ़रिश्ता उसकी दुआ पर आमीन कहता है। (मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमान अल्लाह को खुश करने की नीयत से किसी मुसलमान से मुलाक़ात करने जाता है, तो आसमान से एक फ़रिश्ता पुकारकर कहता है, कि तुम खुशहाली की ज़िंदगी बसर करो और तुम्हे जन्नत मुबारक हो और अल्लाह तआला अर्श वालों से फ़रमाते हैं, मेरे बंदे ने मेरे ख़ातिर मुलाक़त की, इसलिए मेरे ज़िम्मे है, कि मैं इसकी मेहमानी करूं। (अबू याला)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमान दूसरे मुसलमान की तरफ़ हथियार से इशारा करता है, तो उस पर उस वक़्त तक फ़रिश्ते लानत करते रहते हैं, जब तक वह अपना हथियार नीचे नहीं कर लेता।

(मुस्लिम)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दो फ़रिश्ते रोज़ाना सुबह के वक़्त आसमान से उतरते हैं, इनमें से एक फ़रिश्ता यह दुआ करता है कि 'ऐ अल्लाह!' ख़र्च करने वाले को बदल अता फ़रमा और दूसरा फ़रिश्ता यह दुआ करता है कि 'ऐ अल्लाह' रोककर रखने वाले का माल बर्बाद कर।

(मिश्कात)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब मुसलमान घर में दाख़िल होकर अल्लाह का ज़िक्र करता है, फिर दुआ पढ़कर खाना खाता है, तो शैतान अपने साथ वालों से कहता है, कि अब न तो यहां ठहरा जा सकता है और न तो खाना ही मिल सकता है। लेकिन जब मुसलमान घर में दाखिल होकर अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता, तो शैतान अपने साथियों से कहता है, कि तुम्हें यहां रात में रहने का मौक़ा मिल गया।

(मिश्कात)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कपड़े उतारो, तो 'बिस्मिल्लाह' कहकर उतारो। ऐसा करने से शैतान, तुम्हारी शर्मगाह न देख सकेगा।

(हिस्ने हसीन)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया गुस्सा शैतान होता है, क्योंकि शैतान की पैदाइश आग से हुई है और आग पानी से बुझाई जाती है, लिहाज़ा जब तुम में से किसी को गुस्सा आए, तो उसको चाहिए कि वुज़ू कर ले।

(अबू दाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि अल्लाह तआला छींक को पसंद फ़रमाते हैं और जमाई को ना–पसंद करते हैं। क्यों जमाई शैतान की तरफ़

से होती है, लिहाज़ा जब तुममें से किसी को जमाई आए, तो जितना हो सके, उसको रोके रखो, क्योंकि जब तुम में से जब कोई जमाई लेता है, तो शैतान हंसता है।

(बुखारी)

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिन लोगों के साथ कोई यतीम उनके बर्तन में खाने के लिए बैठता है। तो शैतान उनके बर्तन के क़रीब नहीं आता।

(तबरानी)

हज़रत अयाज़ बिन हम्माम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, आपस में गाली गलोच करने वाले दो शख़्स, असल में दो शैतान है, जो फ़हश गोई करते हैं और एक दूसरे को झूठा कहते हैं।

(इब्ने हब्बान)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुममें से कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई की तरफ़ हथियार से इशारा न करे, इसलिए कि उसको मालूम नहीं, कि कहीं शैतान उसके हाथ से हथियार खींच न ले और वह हथियार उस मुसलमान भाई को जा लगे, फिर उसकी सज़ा में उसे जहन्नम में डाल दिया जाए।

(बुखारी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कोई मुसलमान जब बीमार होता है, तो अल्लाह तआला उसके साथ दो फ़रिश्ते लगा देते हैं, जो उस वक़्त तक साथ में रहते हैं, जब तक अल्लाह तआला दो अच्छाइयों में से एक का फ़ैसला न कर दे 'मौत' का या 'ज़िंदगी' का।

(शुऐबुल ईमान, बैहक़ी)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला करामन कातिबीन की तरफ़ अपना पैग़ाम भेजते हैं, कि मेरे बंदे के आमाल नामे में रंज व

ग़म के वक़्त कोई अमल न लिखे।

(दैलमी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रूकने यमानी पर दो फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, जो शख़्स वहां से गुज़रता है, तो उसकी दुआ पर आमीन कहते हैं, और हिज्रे अस्वद पर इतने फ़रिश्ते हैं, जिनकी गिनती नहीं की जा सकती।

(तारीख़े मक्का इमाम रज़्क़)

हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मदीना तैयबा की शान यह है कि अल्लाह तआला ने मदीना के हर घर पर एक-एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है, जो अपनी तलवार को लहराते रहते हैं। इसलिए मदीना तैयबा में दज्जाल दाख़िल न हो सकेगा।

(तबरानी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कि मोमिन फ़ुक़रा (ग़रीब) पर, जो सर्दी की तक्लीफ़ होती है, फ़रिश्ते उन पर तरस खाते हैं और जब सर्दी चली जाती है, तो फ़रिश्ते सर्दी के जाने पर ख़ुश होते हैं।

(तबरानी)

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते ऐसे हैं, जो रात के वक़्त ज़मीन पर उतरते हैं और जिहाद के जानवरों और सवारियों की थकावट दूर करते हैं, मगर उन जानवरों की थकावट दूर नहीं करते, जिनकी गर्दन में घंटी बंधी होती है।

(तबरानी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया अल्लाह तआला का एक फ़रिश्ता वह है, जो रोज़ाना रात दिन यह पुकारता रहता है:

'ऐ चालीस साल की उम्र वाले!' तुम अमल की खेती तैयार कर चुके हो, जिसकी कटाई का वक़्त क़रीब आ गया है।